

पञ्चमोऽध्यायः

स्त्रीणां शुभाशुभलक्षणवर्णनम् स्त्रियों के शुभ-अशुभ लक्षणों का वर्णन

सुमन्तुरुवाच

षट्त्रिंशदाब्दिकं चर्यं गुरौ त्रैवेदिकं व्रतम्। तदर्थिकं पादिकं वा ग्रहणान्तिकमेव च॥ १॥
वेदानधीत्य वेदौ वा वेदं वापि नृपोत्तम। अविप्लुतब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममावसेत्॥ २॥
तं प्रतीतं स्वधर्मेण ब्रह्मदायहरं पितुः। स्रग्विणं तल्प आसीनमर्हयेत्प्रथमं गवा॥ ३॥
गुरुणा समनुज्ञातः समावृत्तौ यथाविधि। उद्वहेत द्विजो भार्यां सवर्णां लक्षणान्वितम्॥ ४॥

सुमन्तु कहते हैं— ३६ वर्ष पर्यन्त गुरु के पास रहकर त्रैवेदिक व्रत (वेदत्रयानुरूप) तथा ब्रह्मचर्य पालन करे। अथवा इससे आधा (१८ वर्ष) अथवा (८ वर्ष) चौथाई काल पर्यन्त वेदाध्ययन करना चाहिये। हे नृपोत्तम! वेदत्रय, वेदद्वय अथवा एक ही वेद का विधिवत् अध्ययन करके (३६ वर्ष पर्यन्त) अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करके उस ब्रह्मचारी को गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहिये। वेदाध्ययन समापन करने वाले उस प्रख्यात ब्रह्मचारी को धन-सम्पत्ति सम्बन्धित उत्तराधिकार की प्राप्ति के लिये गृहस्थाश्रम में अब आना होगा। इसलिये वह ब्रह्मचारी अपने नैष्ठिक धर्मयुक्त गुरु को उत्तम आसन पर आसीन कराकर अनेक मालाओं से भूषित करे तथा मधुपर्क से उनकी पूजा करे। अब गुरु की आज्ञा द्वारा समावर्तन संस्कार को सम्पन्न करके वह द्विज सवर्ण लक्षणयुक्त स्त्री से विवाह करे॥ १-४॥

शतानीक उवाच

लक्षणं द्विजशार्दूल स्त्रीणां वद महामुने। कीदृग्लक्षणसंयुक्ता कन्या स्यात्सुखदा नृप॥ ५॥

शतानीक कहते हैं— हे महामुने! हे द्विजशार्दूल! कृपया स्त्रीलक्षण कहें। हे नृप! कैसे लक्षण से युक्त कन्या पति के लिये सुखदायिनी होती है॥ ५॥

सुमन्तुरुवाच

यदुक्तं ब्रह्मणा पूर्वं स्त्रीलक्षणमनुत्तमम्। श्रेयसे सर्वलोकानां शुभाशुभफलप्रदम्॥ ६॥
तत्ते वच्मि महाबाहो शृणुष्वैकमना नृप। श्रुतेन येन जानीषे कन्यां शोभनलक्षणाम्॥ ७॥
सुखासीनं सुरश्रेष्ठमभिगम्य महर्षयः। प्रपच्छुर्लक्षणं स्त्रीणां यत्पृष्टोऽहं त्वयाधुना॥ ८॥
प्रणम्य शिरसा देवमिदं वचनमब्रुवन्। भगवन्ब्रूहि नः सर्वं स्त्रीणां लक्षणमुत्तमम्॥ ९॥
श्रेयसे सर्वलोकानां शुभाशुभफलप्रदम्। प्रशस्तामप्रशस्तां च जानीमो येन कन्यकाम्॥ १०॥
तेषां तद्वचनं श्रुत्वा विरिञ्चो वाक्यमब्रवीत्। शृणुध्वं द्विजशार्दूला वच्मि युष्मास्वशेषतः॥ ११॥
प्रतिष्ठिततलौ सम्यग्रताम्भोजसमप्रभौ। ईदृशौ चरणौ धन्यौ योषितां भोगवर्धनौ॥ १२॥
करालैरतिनिर्मासै रूक्षैरर्धशिरान्वितैः। दारिद्र्यं दुर्भगत्वं च प्राप्नुवन्ति न संशयः॥ १३॥

सुमन्तु कहते हैं— मैं आपको पूर्वकाल में ब्रह्मदेव द्वारा कहे स्त्रियों के शुभाशुभ फलप्रद लक्षणों को कहता हूँ जिसे उन्होंने लोक-कल्याणार्थ कहा था। हे महाबाहो! हे नृप! एकाग्र होकर सुनें। वह श्रवण करके आप भी शुभ लक्षणों वाली कन्या को जान सकने वाले हो जायेंगे। आपने मुझसे जो स्त्रीलक्षण जानना चाहा है, उसी प्रकार पूर्वकाल में एक बार ऋषिगण ने सुखासनासीन सुरवर ब्रह्मदेव से जानना चाहा था। ऋषियों ने ब्रह्मदेव से शिर नत करके सविधि प्रणाम करके विनयपूर्वक कहा— हे भगवन्! सर्वलोकहितार्थ स्त्रीगण के शुभाशुभ फलप्रद लक्षणों को कहिये, जिसको जानकर हम भी उत्तम तथा निकृष्ट आदि श्रेणी की कन्याओं को जान सकें। ऋषिगण का वचन सुनकर ब्रह्मदेव ने कहा— स्त्रीगण के लक्षण सुनें। कमलदल के समान कान्ति वाले भूमि पर समतल रूप से स्थित रहने वाले जो तालु हैं (पदतल हैं) वे धन्य हैं। इससे स्त्रीगण की भाग्यवृद्धि होती है। कराल, मांसरहित, रुक्ष तथा जिसमें नसें झलक रही हों, ऐसे पदतल स्त्री को दरिद्र बनाते हैं एवं उसके लिए दुर्भाग्यप्रद होते हैं॥ ६-१३॥

अङ्गुल्यः संहता वृत्ताः स्निग्धाः सूक्ष्मनखास्तथा। कुर्वन्त्यन्तमैश्वर्यं राजभावं च योषितः॥ १४॥

ह्रस्वाः सुजीवितं ह्रस्वा विरला वित्तहानये। दारिद्र्यं मूलमग्नासु प्रेष्यं च पृथुलासु च॥ १५॥

परस्परसमारूढैस्तनुभिर्वृत्तपर्वभिः। बहूनपि पतीन्हत्वा दासी भवति वै द्विजाः॥ १६॥

अङ्गुष्ठोन्नतपर्वाणस्तुङ्गाग्राः कोमलान्विताः। रत्नकाञ्चनलाभाय विपरीता विपत्तये॥ १७॥

सघन (परस्पर सटी) छोटे सुन्दर नखयुक्त पैर की अंगुलियाँ स्त्री को ऐश्वर्य तथा राज्यपद देती हैं। छोटी अंगुली वाली नारी दीर्घकाल पर्यन्त जीवित रहती है। लेकिन पैर की अंगुलियाँ यदि छोटी तथा परस्पर सटी न हों तो वे धनहानि करती हैं। मूल पर से वक्र अंगुली दरिद्रताप्रद तथा मोटी अंगुली दासत्व देती हैं। हे द्विजगण! पैरों में अत्यन्त पतली छोटी परस्परतः एक-दूसरे पर चढ़ी गोल पोरयुक्त वाली अंगुली जिस नारी की होती है, वह अनेक पतियों को मृत्यु प्रदान करके दासी हो जाती है। पैरों में उच्च पोर से युक्त अंगुष्ठ तथा उन्नत अग्र वाली कोमल अंगुलियाँ रत्नलाभ एवं स्वर्णलाभ की सूचना देती हैं। जो इससे विपरीत स्थिति वाली होती हैं, वे विपत्तिप्रद हैं॥ १४-१७॥

सुभगत्वं नखैः स्निग्धैराताम्रैश्च धनाढ्यता। पुत्राः स्युर्नृपराजैरेभिः सुसूक्ष्मैश्चापि राजता॥ १८॥

पाण्डुरैः स्फुटितै रूक्षैर्नीलैर्धूमैस्तथा खरैः। निःस्वता भवति स्त्रीणां पीतैश्चाभक्ष्यभक्षणम्॥ १९॥

गुल्फाः स्निग्धाश्च वृत्ताश्च समारूढशिरास्तथा। यदि स्युर्नूपुरान्दध्युर्बान्धवाद्यैः समाप्नुयुः॥ २०॥

अशिराः शरकाण्डाभाः सुवृत्ताल्पतनूरुहाः। जङ्घाः कुर्वन्ति सौभाग्यं यानं च गजवाजिभिः॥ २१॥

क्लिश्यते रोमजङ्घा स्त्री भ्रमत्युद्धतपिण्डिका। काकजङ्घा पतिं हन्ति वाचाटा कपिला च याः॥ २२॥

जानुभिश्चैव मार्जारसिंहजान्वनुकारिभिः। श्रियमाप्य सुभाग्यत्वं प्राप्नुवन्ति सुतांस्तथा॥ २३॥

घटाभैरध्वगा नार्यो निर्मासैः कुलटाः स्त्रियः। शिरालैरपि हिंसाः स्युर्विश्लिष्टैर्धनवर्जिताः॥ २४॥

चिकने नख की अंगुली सौभाग्यप्रद, लाल नखोंवाली अंगुली प्रचुरधनप्रद, उन्नत नखोंवाली अंगुली अनेक पुत्रप्रद तथा सूक्ष्म नखयुत अंगुली राजत्वप्रद होती हैं। जो नख (स्त्री के) पाण्डुर, टूटे-फटे, रुक्ष, नीलिमायुक्त, धूमिल तथा खर हैं, वे निर्धनताप्रद हैं। पीले नखवाली स्त्री अभक्ष्यभक्षण करती है। यदि स्त्री की एड़ी के ऊपर वाली गाँठ (गुल्फ) चिकने, गोल, नसों को ढके हुए हो, तब उस स्त्री के पैरों में नूपुर शब्दायमान होता रहेगा। वह बान्धवों से युक्त होगी। जिस स्त्री का जघन प्रदेश (जङ्घा) शिराओं से रहित, सरकण्डे के समान गौरवर्ण, सुन्दर गोल, छोटी रोमावलियों से युक्त हो, वे परम सौभाग्यवती, हाथी, घोड़े आदि वाहनवाली होती हैं। अधिक रोमावलि युक्त जघनप्रदेश वाली स्त्री कष्ट में रहती है। जिस स्त्री की पिण्डली ऊपर की ओर तनी हो, वह अधिक भ्रमणशील होती है। काक के समान जघनप्रदेश वाली नारी भूरे रंग की स्त्री बक-बक करनेवाली तथा पति का नाश करती है। बिड़ाल तथा सिंहवत् घुटनेवाली स्त्री लक्ष्मीवाली, सौभाग्यवती तथा अनेक पुत्रोंवाली होती है॥ १८-२४॥

अत्यन्तकुटिलै रूक्षैः स्फुटिताग्रैर्गुडप्रभैः। अनेकजैस्तथा रोमैः केशैश्चापि तथाविधैः॥ २५॥

अत्यन्तपिङ्गला नारी विषतुल्येति निश्चितम्। सप्ताहाभ्यन्तरे पापा पतिं हन्यान्न संशयः॥ २६॥

हस्तिहस्तनिर्भैर्वृत्तै रम्भाभैः करभोपमैः। प्राप्नुवन्त्यूरुभिः शशस्त्रियः सुखमनङ्गजम्॥ २७॥

कलश जैसे घुटनेवाली स्त्री अधिक चलती है। मांसहीन घुटनों वाली कुलटा होती है। जिस स्त्री के घुटने शिराओं से भरे हैं वह हिंसक स्वभाव की होती है। दुर्बल तथा अच्छे न लगने वाले घुटनों वाली धनहीन होती है। अति कुटिल, रुक्ष, टूटे अग्रभाग वाले, गुड़ जैसे लाल वर्ण के एक-एक रोमछिद्र से जिनके अनेक रोम तथा केश निकल रहे हों, अत्यन्त पिंगल वर्ण वाली नारी विषतुल्या है। यह निश्चय है। वह पापिनी भी एक सप्ताह काल में ही पति का नाश करती है। यह निःसन्दिग्ध है। हस्तिशुण्डवत् उतार-चढ़ाववाले, कदली जैसे गौरवर्ण, चिकने शीतल करभवत् मनोहारी एवं स्निग्ध उरुवाली नारी सदा कामसुख भोगती है॥२५-२७॥

दौर्भाग्यं बद्धमांसैश्च बन्धनं रोमशोरुभिः। तनुभिर्वधमित्याहुर्मध्याच्छिद्रेष्वनीशता॥ २८॥
सन्ध्यावर्णं समं चारु सूक्ष्मरोमान्वितं पृथु। जघनं शस्यते स्त्रीणां रतिसौख्यकरं द्विज॥ २९॥
अरोमको भगो यस्याः समः सुश्लिष्टसंस्थितः। अपि नीचकुलोत्पन्न राजपत्नी भवत्यसौ॥ ३०॥
अश्वत्थपत्रसदृशः कूर्मपृष्ठोन्नतस्थिता। शशिबिम्बनिभश्चापि तथैव कलशाकृतिः॥
भगः शस्ततमः स्त्रीणां रतिसौभाग्यवर्धनः॥ ३१॥

जिसके उरु प्रदेश के मांस बँधे जैसे दीखते हों, वह स्त्री अतीव दुर्भगा होती है। जिसके उरुप्रदेश रोमों से भरे हों, ऐसी स्त्री बन्धन को प्राप्त होती है। सूक्ष्म उरुवाली का वध होता है, ऐसा कहा जाता है। जिसके उरु के मध्य में छिद्र हो वह नारी प्रभुत्वहीन रहती है। हे द्विजवर! सन्ध्याकालीन आकाश (लाल) के वर्णों वाले, सूक्ष्म रोमयुक्त, स्थूल जघन वाली नारी परम प्रशंसित होती है। वह विशेष रतिसुख प्रदात्री होती है। जिस नारी का योनि प्रदेश रोम से रहित, समान हो, सन्धियुक्त हो वह राजपत्नी होगी, भले ही वह निम्नकुलोत्पन्ना हो। जिस स्त्री की योनि पीपल के पत्ते जैसी (त्रिकोण), कच्छप पीठ के समान बीच से ऊपर उठी चन्द्रबिम्बवत्, कलशाकृति हो वह अत्यन्त प्रशस्त है। इससे उस नारी के रतिसुख तथा सौभाग्य की वृद्धि होती है॥ २८-३१॥

तिलपुष्पनिभो यश्च यद्यग्रे खुरसन्निभः। द्वावप्येतौ परप्रेष्यं कुर्वते च दरिद्रताम्॥ ३२॥
उलूखलनिभैः शोकं मरणं विवृताननैः। विरूपैः पूतिनिर्मासैर्गजसन्निभरोमभिः॥
दौःशील्यं दुर्भगत्वं च दारिद्र्यमधिगच्छति॥ ३३॥

कपित्थफलसंकाशः पीनो वलिविर्जितः। स्फीतः प्रशस्यते स्त्रीणां निन्दितश्चान्यथा द्विजाः॥ ३४॥
पयोधरभरानम्रप्रचलत्त्रिवलीगुरुः। मध्यः शुभावहः स्त्रीणां रोमराजीविभूषितः॥ ३५॥
पणवाभैर्मृदङ्गाभैस्तथा मध्ये यवोपमैः। प्राप्नुवन्ति भयावासक्लेशदौःशील्यमीदृशैः॥ ३६॥

जो योनि तिल पुष्पवत् हो अथवा पशु के खुर जैसी हो यह दारिद्र्यबोधक तथा दासत्व की प्रतीक है। ओखली के समान योनि शोक देती है। असुन्दर, दुर्गन्धित, मांसरहित, हाथी के रोम के समान रोमवाली योनि स्त्रीगण की दुःशीलता, दुर्भाग्य, दरिद्रतासूचक है। हे द्विजगण! कैथे के फल की तरह गोलाकार, पुष्ट, सिकुड़नरहित, चिकनी योनि शुभ है। जिस स्त्री का मध्यभाग उन्नत स्तनों के भार से नम्र है, चंचल त्रिवली रेखायुक्त है, रोमावलि से भूषित है, उस स्त्री हेतु परमकल्याणकर तथा प्रशंसित कहा गया है। पणव, मृदङ्ग, जौ की तरह जिनका मध्य भाग है, वे भय, गृहकष्ट तथा दुःशीलयुक्त होती हैं। ३२-३६॥

अवक्रानुल्बणं पृष्ठमरोमशमर्हितम्। नानास्तरणपर्यङ्करतिसौख्यकरं परम्॥ ३७॥
कुब्जमद्रोणिकं पृष्ठं रोमशं यदि योषितः। स्वप्नान्तरे सुखं तस्या नास्ति हन्यात्पतिं च सा॥ ३८॥
विपुलैः सुकुमारैश्च कुक्षिभिः सुबहुप्रजाः। मण्डूककुक्षिर्या नारी राजानं सा प्रसूयते॥ ३९॥
उन्नतैर्बलिभिर्वन्ध्याः सुवृत्तैः कुलटाः स्त्रियः। जारकर्मरतास्ताः स्युः प्रव्रज्यां च समाप्नुयुः॥ ४०॥
उन्नता च नतैः क्षुद्रा विषमैर्विषमाशया। आयुरैश्वर्यसम्पन्ना वनिता हृदयैः समैः॥ ४१॥
सुवृत्तमुन्नतं पीनमदूरोन्नतमायतम्। स्तनयुग्ममिदं शस्तमतोऽन्यदसुखावहम्॥ ४२॥
उन्नतिः प्रथमे गर्भे द्वयोरेकस्य भूयसी। वामे तु जायते कन्या दक्षिणे तु भवेत्सुतः॥ ४३॥

स्त्री का वह पृष्ठ प्रदेश प्रशंसनीय है जो सीधा, समान, ऊपर की ओर उठा न हो, रोमावलि रहित हो। ऐसा पृष्ठ प्रदेश विविध प्रकार के आस्तरण (बिस्तर), पलंग तथा रतिसुख प्रदाता होता है। यदि पृष्ठ प्रदेश कुब्ज (कुबड़ा), भद्दा, तथा रोम भरा हो, ऐसी स्त्री कभी भी सुख नहीं पाती तथा पतिहन्ता होती है। विस्तारयुक्त, कोमल उदर वाली स्त्री अनेक सन्तानवती होती है। मेंढक के समान उदर वाली स्त्री राजा की जननी होती है। उदर की रेखायें (सिकुड़न) यदि उन्नत हों तब स्त्री बन्ध्या, यदि ये रेखायें गोलाकृति हों तब स्त्री कुलटा होती है। ऐसी नारी अपने जार (परपुरुष) के साथ जुड़ी रहती है। जिस नारी का हृदय प्रदेश झुका हो, वे उन्नत स्वभाव की होती है। जिनका हृदय प्रदेश उच्च-निम्न हो वे क्षुद्र स्वभाव तथा कठोर होती है। समान हृदयवाली दीर्घायु तथा ऐश्वर्ययुक्त हो जाती है। जिन स्त्री के दोनों स्तन सुडौल, गोलाकृति उन्नत, आयत एवं सघन (सटे हुये) हैं वे सुखावह होती हैं। अन्यथा इसके विपरीत होने पर दुःखावह स्थिति होती है। प्रथम गर्भावस्था में बाँये स्तन की वृद्धि से कन्या तथा दाहिने स्तन की वृद्धि से पुत्रोत्पत्ति होती है॥३७-४३॥

दीर्घं तु चूचुके यस्याः सा स्त्री धूर्ता रतिप्रिया। सुवृत्ते तु पुनर्यस्या द्वेष्टि सा पुरुषं सदा॥ ४४॥

स्तनैः सर्पफणाकारैः श्वजिह्वाकृतिभिस्तथा। दारिद्र्यमधिगच्छन्ति स्त्रियः पुरुषचेष्टिताः॥

अवष्टब्धघटीतुल्या भवन्ति हि तथा द्विजाः॥ ४५॥

सुसमं मांसलं चारु शिरो रोमविवर्जितम्। वक्षो यस्या भवेन्नार्या भोगान्भुक्ते यथेप्सितान्॥ ४६॥

हिंसा भवति वक्रेण दौःशील्यं रोमशेन तु। निर्मासेन तु वैधव्यं विस्तीर्णे कलहप्रिया॥ ४७॥

जिसके चूचुक दीर्घ (लम्बाकृति) होते हैं, वह परमधूर्त तथा रतिक्रिया की रुचि रखनेवाली होती है। जिसके चूचुक अधिक गोलाकृति वाले होते हैं, वह पति से द्वेष रखती है। जिस नारी का स्तन साँप के फन जैसा तथा कुत्ते की जिह्वा जैसा है, वे पुरुषवत् चेषारत एवं दरिद्र होती हैं। इसी प्रकार का अवगुण छोटे कलश के समान स्तनयुक्त रमणी में होता है। हे द्विजगण! जिस स्त्री का वक्षस्थल समान, मांसल है नसों से तथा रोम से रहित है उसे इच्छित भोग के अवसर मिलते रहते हैं। वक्ररूप वक्षवाली हिंसक स्वभाववाली होती है। जिनका वक्ष रोमावलि से युक्त हो, वे दुःशीला होती हैं। जिनका वक्ष मांसरहित हो— वे विधवा, विस्तृत वक्षवाली कलही होती हैं॥४४-४७॥

चतस्रो रक्तगम्भीरा रेखाः स्निग्धाः करे स्त्रियाः। यदि स्युः सुखमाप्नोति विच्छिन्नाभिरनीशता॥ ४८॥

रेखाः कनिष्ठिकामूलाद्यस्याः प्राप्ताः प्रदेशिनीम्। शतमायुर्भवेत्तस्यास्त्रयाणामुन्नतौ क्रमात्॥ ४९॥

संवृत्ताः समपर्वाणस्तीक्ष्णाग्राः कोमलत्वचः। समा हांगुलयो यस्याः सा नारी भोगवर्धिनी॥ ५०॥

बन्धुजीवारुणैस्तुंगैर्नखैरैश्वर्यमाप्नुयात्। खरैर्वक्रैर्विवर्णाभैः श्वेतप्रीतैरनीशता॥ ५१॥

रक्तैर्मृदुभिरैश्वर्यं निश्छिद्राङ्गुलिभिर्द्विजाः। स्फुटितैर्विषमै रूक्षैः क्लेशं पाणिभिराप्नुयुः॥ ५२॥

जिस नारी की हथेली में चार स्निग्ध तथा रक्तवर्णी गंभीर रेखायें बनी हों, वह प्रचुर सुख प्राप्त करती है। तथापि ये रेखायें यदि विच्छिन्न तथा पूरी न हों तब वह नारी प्रभुत्वरहित हो जाती है। जिसकी हथेली की कनिष्ठामूल से निकल कर एक रेखा तर्जनी तक पहुँचे तथा वह बाकी तीन अंगुलियों तक उन्नत जैसी हो, वह सौ वर्ष की आयु प्राप्त करती है। जिसकी हथेली की अंगुलियाँ सुडौल, समानपर्व वाली, आगे की ओर तीक्ष्ण (पतली), कोमल त्वचायुक्त हो, समान हो (सन्तुलित आकृति की हो) वह भोगवृद्धि करने वाली नारी है। बन्धूक पुष्प के समान लाल तथा ऊपर उठे नखोंवाली नारी ऐश्वर्यवाली होती है। प्रखर, वक्र, विवर्ण, श्वेत तथा पीले नख नारी को अप्रभुत्व प्रदान करते हैं। हे द्विजगण! रक्तवर्ण, मृदुल तथा छिद्ररहित अंगुलियों वाली हथेलीयुक्त रमणी ऐश्वर्यशाली होती है। जिसकी अंगुलियाँ परस्पर सटी नहीं हैं, स्फुट हैं, रूक्ष हैं वह ऊँची-नीची हथेली वाली स्त्री क्लेशयुक्त होती है॥४८-५२॥

समरेखा यवा यासामङ्गुलिपर्वसु। तासां हि विपुलं सौख्यं धनं धान्यं तथाऽक्षयम्॥ ५३॥

मणिबन्धोऽव्यवच्छिन्नो रेखात्रयविभूषितः। ददाति न चिरादेव भोगमायुस्तथाक्षयम्॥ ५४॥

श्रीवत्सध्वजपद्माक्षगजवाजिनिवेशनैः। चक्रस्वस्तिकवज्रासिपूर्णकुम्भनिभाङ्गुशैः॥ ५५॥

प्रासादच्छत्रमुकुटैर्हारकेयूरकुण्डलैः। शङ्खतोरणनिर्व्यूहैर्हस्तन्यस्तैर्नृपस्त्रियः॥ ५६॥

जिस स्त्री की हथेली में समान रेखा तथा अंगुष्ठ में यव (जौ) के आकृति की रेखा रहती है वह विपुल सौख्य, आयु तथा अक्षय धनधान्य प्राप्त करती है। जिस नारी का मणिबन्ध तीन रेखाओं से युक्त हो जो लम्बी हों, तब वह अक्षय, भोग, ऐश्वर्य तथा दीर्घायु प्राप्त करती है। जिस नारी के हाथ में श्रीवत्स, पताका, कमल, अक्ष, हस्ति, अश्व, भवन, चक्र, स्वस्तिक, वज्र, असि (तलवार) पूर्ण कलश, अंकुश, राजभवन, छत्र, मुकुट, हार, केयूर, कुण्डल, शंख, तोरण, व्यूह चिह्न बने हों वह राजस्त्री होती है॥५३-५६॥

यस्याः पाणितले रक्ता यूपकुम्भाश्च कुण्डिकाः। दृश्यन्ते चरणे यस्या यज्ञपत्नी भवत्यसौ॥ ५७॥
वीथ्यापणतुलामानैस्तथा मुद्रादिभिः स्त्रियः। भवन्ति वणिजां पत्न्यो रत्नकाञ्चनशालिनाम्॥ ५८॥
दात्रयोक्त्रयुगाबन्धफलोलूखललाङ्गलैः। भवन्ति धनधान्याढ्याः कृषीवलजनाङ्गनाः॥ ५९॥
अनुन्नतशिरासन्धि पीनं रोमविवर्जितम्। गोपुच्छकृति नारीणां भुजयोर्युगलं शुभम्॥ ६०॥

जिस स्त्री की हथेली पर रक्तवर्ण के स्तम्भ, कलश तथा कुण्डिका के ४ पाये हों, वह यज्ञकर्ता की गृहिणी होती है। जिसकी हथेली पर गली, बाजार, तराजू तथा मुद्राङ्कित चिह्न हों, वह सुवर्ण, रत्न के बड़े व्यवसायी की पत्नी होगी। हथेली पर दाब (काटने का औजार), योक्त्र, जुआ, फाल, ओखली तथा हल चिह्न हो, वह धनधान्य सम्पन्न तथा कृषक पत्नी होगा। जिसकी नसों तथा सन्धियाँ उभरी न हों, पुष्ट-मांसल-रोमरहित हों, गोपुच्छकृति हों ऐसी भुजा वाली स्त्री कल्याणकारिणी होती है॥५७-६०॥

निगूढग्रन्थो यस्याः कूर्परौ रोमवर्जितौ। बाहू वै ललितौ यस्याः प्रशस्तौ वृत्तकोमलौ॥ ६१॥
उन्नतावनतौ चैव नातिस्थूलौ न रोमशौ। सुखदौ तु सदा स्त्रीणां सौभाग्यारोग्यवर्धनौ॥ ६२॥
स्थूले स्कन्धे वहेद्भारं रोमशे व्याधिता भवेत्। वक्रस्कन्धे भवेद्वन्ध्या कुलटा चोन्नतानने॥ ६३॥
स्पष्टं रेखात्रयं यस्या ग्रीवायां चतुरङ्गुलम्। मणिकाञ्चनमुक्ताढ्यं सा दधाति विभूषणम्॥ ६४॥
अधना स्त्री कृशग्रीवा दीर्घग्रीवा च बन्धकी। ह्रस्वग्रीवा मृतापत्या स्थूलग्रीवा च दुःखिता॥ ६५॥
अनुन्नता समांसा च समा यस्याः कृकाटिका। सुदीर्घमायुस्त्वस्यास्तु चिरं भर्ता च जीवति॥ ६६॥

जिस नारी की केहुनी की ग्रन्थि ढकी सी हो, रोमरहित, गोल, कोमल, ललित भुजा वाली हो, वह स्त्री प्रशंसित है। जिसकी बाहु उचित स्थान पर उन्नत हो तथा उचित स्थान पर अवनत हो, भेदेपन, स्थूलता से रहित तथा रोमरहित हो, वह बाहु स्त्रीगण के सौभाग्य तथा आरोग्य की वृद्धि करने वाली होती है। मोटे कन्धे वाली भी भार होती है। जिसके कन्धे रोयें से भरे होते हैं, वह रोगिणी होती है। वक्र कन्धे वाली वन्ध्या तथा उच्च-निम्न कन्धे वाली कुलटा कही गयी है। जिस नारी के कण्ठ में सामने की ओर चार अंगुलपर्यन्त की चौड़ाई के स्थान में स्पष्ट झलकने वाली तीन रेखायें हों, वह मणि तथा स्वर्ण विभूषणधारिणी होती है। दुर्बल कण्ठ वाली निर्धन, लम्बी ग्रीवा वाली चरित्रभ्रष्टा, अत्यन्त छोटे कण्ठ वाली मृतसन्तति वाली, स्थूल ग्रीवा वाली सदैव दुःखी होती है। जिस स्त्री के गले की कर्कोटिका अस्थि जो गर्दन एवं रीढ़ की अस्थि को युक्त करती है, वह अधिक उठी न हो तथा मांसल एवं समान हों उसकी आयु लम्बी होती है तथा उसका पति भी दीर्घजीवी होता है॥६१-६६॥

निर्मासा बहुमांसा च शिराला रोमशा तथा। कुटिला विकटा चैव विस्तीर्णा न च शस्यते॥ ६७॥
न स्थूलो न कृशोऽत्यर्थं न वक्रो न च रोमशः। हनुरेवंविधः श्रेयास्ततोऽन्यो न प्रशस्यते॥ ६८॥
चतुरस्रमुखी धूर्ता मण्डलास्या शिवा भवेत्। अप्रजा वाजिवक्त्रा स्त्री महावक्त्रा च दुर्भगा॥ ६९॥
श्वराहवृकोलूकमर्कटास्याश्च याः स्त्रियः। क्रूरास्ताः पापकर्मिण्यः प्रजाबान्धववर्जिताः॥ ७०॥

यदि यह ग्रन्थि अति मांसल हो अथवा मांसरहित हो, नसों दीखती हों, रोमयुक्त, वक्र, विस्तीर्ण तथा विकट हो तो वह अच्छा लक्षण नहीं है। यह न तो अत्यन्त स्थूल, न कृश, न वक्र, न रोमावलियुक्त चिबुक स्त्रीगण के लिये परमकल्याणप्रद होता है। चौकोर मुखयुक्त स्त्री धूर्त होती है। मण्डलाकृति वाली (गोलमुख) शुभ होती है। अश्व के समान मुख वाली स्त्री सन्तानरहित तथा लम्बी मुख वाली दुर्भगा होती है। कुत्ते, शूकर, भेड़िया, उल्लू तथा वानर मुख वाली नारी क्रूरा, पापशीला, सन्तान एवं बन्धु-बान्धवरहित होती है॥६७-७०॥

मालतीबकुलाम्भोजनीलोत्पलसुगन्धि यत्। वदनं मुच्यते नैतत्पानताम्बूलभोजनैः॥ ७१॥
 ताम्राभः किञ्चिदालम्भः स्थौल्यकाश्यविवर्जितः। अधरो यदि तुङ्गश्च नारीणां भोजदः सदा॥ ७२॥
 स्थूले कलहशीला स्याद्विवर्णे चातिदुःखिता। उत्तरोष्ठेन तीक्ष्णेन वनिता चातिकोपना॥ ७३॥
 जिह्वा तनुतरा वक्रा ताम्रा दीर्घा च शस्यते। स्थूला ह्रस्वा विवर्णा या वक्रा भिन्ना च निन्दिता॥ ७४॥
 शङ्खकुन्देन्दुधवलैः स्निग्धैस्तुङ्गैरसन्धिभिः। मिष्टान्नपानमाप्नोति दन्तैरेभिरनुन्नतैः ॥ ७५॥

जिसका मुख सदैव मौलश्री, लालकमल, नीलकमलवत् सुगन्धित हो वह स्त्री कभी स्वादिष्ट पेय, ताम्बूल तथा अच्छे भोजन से रहित नहीं होती। जिस नारी के अधर लालिमा वाले, कोमल हों, स्थूलत्व तथा कृशता से रहित ऊर्ध्व में उठे होते हैं, वे भोगप्रद होते हैं। स्थूल अधरवाली कलही, विवर्ण अधर वाली दुःखभोगिनी, ऊपर उठे ओष्ठ यदि अत्यन्त पतले हों वह क्रोधी होती है। जिसकी जिह्वा पतली, वक्र, लम्बी तथा लालिमा वाली हो, वह प्रशंसित है। मोटी, छोटी, विवर्ण, वक्र तथा भिन्नवत् प्रतीत होने वाली जिह्वा निन्दित होती है। शंख, कुन्दपुष्प, चन्द्रवत् श्वेत, चिकने, सन्धिरहित (आपस में सटे), अनुन्नत दाँत वाली स्त्री मिष्टान्न तथा सुन्दर पेय प्राप्त करती है॥७१-७५॥

सूक्ष्मैरतिकृशैर्ह्रस्वैः स्फुटितैर्विरलैस्तथा। रूक्षैश्च दुःखिता नित्यं विकटैर्भामिनी भवेत्॥ ७६॥
 समुष्टदर्पणाम्भोजपूर्णबिम्बेन्दुसन्निभम्। वदनं वरनारीणामभीष्टफलदं स्मृतम्॥ ७७॥
 न स्थूला न कृशा वक्रा नातिदीर्घा समुन्नता। ईदृशी नासिका यस्याः सा धन्या तु शुभङ्करी॥ ७८॥
 उन्नता मृदुला या च रेखा शुद्धा न सङ्गता। भूर्वक्त्रतुल्या सूक्ष्मा च योषितां सा सुखावहा॥ ७९॥

इसके विपरीत अत्यन्त छोटे, कमजोर, बीच में फूटे, आपस में एक-दूसरे से दूर उगे, रूक्ष तथा विकटाकृति दाँतों वाली महिलायें दुःखभागी होती हैं। अत्यन्त स्वच्छ, सुरूप, दर्पणवत्, कमलपूर्ण चन्द्र बिम्बवत् आकर्षक मनोहर मुख उत्तम नारीगण को वांछित फल प्रदान करता है। जिस स्त्री की नासिका अधिक मोटी अथवा अत्यन्त कृश नहीं है, अत्यन्त लम्बी नहीं है, अपितु समुन्नत है, वह कल्याणी शुभ स्त्री धन्य है। जिसकी सूक्ष्म भौं उन्नत, कोमल, शुद्ध रेखा रूप में अंकित, मुख के समान आकृतियुक्त है, वह स्त्री के लिये सुख देने वाली है॥७६-७९॥

धनुस्तुल्याभिः सौभाग्यं वन्ध्या स्याद्दीर्घरोमभिः। पिङ्गलासङ्गता ह्रस्वा दारिद्र्याय न संशयः॥ ८०॥
 नीलोत्पलदलप्रख्यैराताम्रैश्चारुपक्ष्मभिः। वनिता नयनैरेभिर्भोगसौभाग्यभागिनी॥ ८१॥
 खञ्जनाक्षी मृगाक्षी च वराहाक्षी वराङ्गना। यत्र यत्र समुत्पन्ना महान्तं भोगमश्नुते॥ ८२॥
 अगम्भीरैरसंश्लिष्टैर्बहुरेखाविभूषितैः। राजपत्न्यो भवन्तीह नयनैर्मधुपिङ्गलैः॥ ८३॥

धनुष के समान वक्र भौं सौभाग्यप्रद है। जिस स्त्री की भौं दीर्घ रोमयुक्त है, वह वन्ध्यापन की सूचक है। जो भौं पिङ्गल वर्ण, असंगत तथा छोटी है, वह निःसन्दिग्ध रूप से दरिद्रतादायक है। नीलकमलवत् मनोहारी, किञ्चित् लालिमा वाली, सुन्दर भौं से युक्त नेत्र वाली जो स्त्री है, उसे सौभाग्य एवं भोग प्राप्त होता है। जो स्त्री खंजन, मृग, शूकरवत् नेत्रों वाली सुन्दरी है, वह जहाँ कहीं भी जन्म ले, महान् भोग एवं ऐश्वर्य उसे मिलता ही है। गंभीरतारहित असंश्लिष्ट, अनेक रेखाओं से विभूषित मधु के समान रक्तिमवर्ण नेत्रवाली नारी इस लोक में राजपत्नी जैसी हो जाती है॥८०-८३॥

वायसाकृतिनेत्राणि दीर्घापाङ्गानि योषिताम्। अनाविलानि चारूणि भवन्ति हि विभूतये॥ ८४॥
 गम्भीरैः पिङ्गलैश्चैव दुःखिताः स्युश्चिरायुषः। वयोमध्ये त्यजेत्प्राणानुन्नताक्षी तु याङ्गना॥ ८५॥
 रक्ताक्षी विषमाक्षी च धूम्राक्षी प्रेतलोचना। वर्जनीया सदा नारी श्वनेत्रा चैव दूरतः॥ ८६॥
 उद्भ्रान्तकैः करैश्चित्रैर्नयनैस्त्वंगनास्त्विह। मद्यमांसप्रिया नित्यं चपलाश्चैव सर्वतः॥ ८७॥
 करालाकृतयः कर्णा नभः शब्दास्तु संस्थिताः। वहन्ति विकसत्कान्तिं हेमरत्नविभूषणम्॥ ८८॥
 खरोष्ट्रनकुलोलूककपिलश्रवणाः स्त्रियः। प्राप्नुवन्ति महदुःखं प्रायशः प्रव्रजन्ति च॥ ८९॥
 ईषदापाण्डुगण्डा या सुवृत्ता पर्वणि त्विह। प्रशस्ता निन्दिता त्वन्या रोमकूपकदूषिता॥ ९०॥

जिस स्त्री के नेत्रद्वय गहरे पीले वर्ण के समान गम्भीर हैं, वे आयु पाकर भी दुःख भोगती हैं। जिसके नेत्र काक के नेत्रों के समान लम्बे कोण वाले हैं, उन स्वच्छ सुन्दरीगण के नेत्र धन-सम्पदाप्रद हैं। उन्नत नेत्रों वाली युवावस्था में ही मृत हो जाती है। रक्तवर्ण, विषम, धूमिल, प्रेतवत् नेत्रोंवाली नारी सदैव त्याज्य है। कुत्ते के समान नेत्रोंवाली को दूर से ही त्यागे। भेंगी आँखवाली, उद्भ्रान्त नेत्रोंवाली तथा विचित्रवर्णों नेत्रोंवाली स्त्री मद्य-मांसप्रिय तथा सदैव चंचल होती है। जिस स्त्री के कर्णद्वय कराल तथा लम्बे हैं, वे सुवर्ण तथा कर्णों के अलंकारों से शोभित तथा मनोहर कान्तियुक्त होती हैं। गर्दभ, ऊँट, नेवले, नकुल, उलूकवत् कानों वाली तथा कपिल वर्ण के कानों वाली स्त्री यत्र-तत्र भ्रमण करने वाली तथा दुःखी होती हैं। तनिक पाण्डुवर्णयुक्त कपोल जो (गोल होते हैं) स्त्रीगण हेतु प्रशस्त है। ऐसे कपोल जो रोमकूप से दूषित हैं, वे स्त्रीगण दूषित कहलाती हैं॥८४-९०॥

अर्धेन्दुप्रतिमाभोगमरोम तु समाहितम्। भोगारोग्यकरं श्रेष्ठं ललाटं वरयोषिताम्॥ ९१॥
द्विगुणं परिणाहेन ललाटं विहितं च यत्। शिरः प्रशस्तं नारीणामधन्या हस्तिमस्तका॥ ९२॥
सूक्ष्माः कृष्णा मृदुस्निग्धाः कुञ्जिताग्राः शिरोरुहाः। भवन्ति श्रेयसे स्त्रीणामन्ये स्युः क्लेशशोकदाः॥ ९३॥
हंसकोकिलवीणालिशिखिवेणुस्वराः स्त्रियः। प्राप्नुवन्ति बहून्भोगान्भृत्यानाज्ञापयन्ति च॥ ९४॥
भिन्नकांस्यस्वरा नारी खरकाकस्वरा च या। रोगं व्याधिं भयं शोकं दारिद्र्यं चाधिगच्छति॥ ९५॥

अर्धचन्द्रमा के समान आकार वाले रोमावलि से रहित, समान सुन्दर ललाट जिस स्त्री के होते हैं वे बहुभोग तथा आरोग्य वृद्धि वाले होते हैं। ऐसे ललाट से द्विगुणित शिर स्त्रीगण हेतु प्रशंसनीय हैं। जिसका शरीर हाथी जैसा हो, वह स्त्री प्रशंसनीय नहीं है। जिस स्त्री के केश कृष्ण वर्ण, मृदुल, चिक्कण, आगे की ओर घुंघराले होते हैं वे स्त्री हेतु कल्याणप्रद हैं। इसके विपरीत जो केश होते हैं, वे सभी क्लेश तथा शोकप्रद होते हैं। जिन स्त्रीगण का स्वर हंस, कोकिल, वीणा, भ्रमर, मयूर तथा वेणु के समान हो वे अतीव भोगवती तथा ऐश्वर्यवती होती हैं। वे भृत्यों पर शासन करती हैं। जो स्त्री फूटे काँसे के बर्तन जैसी आवाज वाली, काक एवं गर्दभवत् स्वरवाली होती है— वह रोग, शोक, व्याधि, भय एवं दरिद्रता प्राप्त करती है॥९१-९५॥

हंसगोवृषचक्राह्वमत्तमातङ्गगामिनी। स्वकुलं द्योतयेन्नारी महिषी पार्थिवस्य च॥ ९६॥
श्वशृगालगतिर्निन्द्या या च वायसवद्व्रजेत्। दासी मृगगतिर्नारी द्रुतगामी च बन्धकी॥ ९७॥
फलिनी रोचना हेमकुङ्कुमप्रभ एव च। वर्णः शुभकरः स्त्रीणां यश्च दूर्वाङ्कुरोपमः॥ ९८॥
मृदूनि मृदुरोमाणि नात्यन्तस्वेदकानि च। सुरभीणि च गात्राणि यासां ताः पूजिताः स्त्रियः॥ ९९॥
नोद्वहेत्कपिलां कन्यां नाधिकाङ्गीं न रोगिणीम्। नालोमिकां नातिह्रस्वां न वाचाटां न पिङ्गलाम्॥ १००॥

हंस, गौ, वृषभ, चक्रवाक तथा मदमत्त हस्ति के समान गमन करने वाली नारी स्वकुल को प्रकाशित करने वाली तथा राजस्त्री होती है। कुत्ते तथा शृगाल जैसी गमन करने वाली स्त्री निन्दायोग्य होती है। मृगवत् गमनकारी स्त्री पराई दासी तथा शीघ्र गमनकारिणी व्यभिचारिणी होती है। मेंहदी, हल्दी, गोरोचन, स्वर्ण, केसर तथा चम्पा जैसा शरीरवर्ण स्त्रीगण हेतु शुभप्रद कहा गया है। दूर्वा के अंकुर के समान (गौरवर्ण) वर्ण भी इनके लिये शुभ है। मृदु तथा मनोहर रोम से भूषित हों तथा अधिक पसीना न निकले तथा शरीर भी सुगन्धित हो, ऐसी नारी पूज्या है। कपिल वर्ण की कन्या विवाहयोग्य नहीं होती। रोगी, अधिक अंगों वाली, पूर्णतः रोओं से रहित, नारी, बकवाद करने वाली पिंगलवर्णी कन्या से विवाह करना उचित नहीं है॥९६-१००॥

नर्क्षवृक्षनदीनाम्नीं नान्त्यपर्वतनामिकाम्। न पक्ष्यहिप्रेष्यनाम्नीं न च भीषणनामिकाम्॥ १०१॥
अव्यङ्गाङ्गीं सौम्यनाम्नीं हंसवारणगामिनीम्। तनुलोमकेशदशनां मृदङ्गीमुद्वहेत्स्त्रियम्॥ १०२॥
महान्त्यपि समृद्धानि गोजाविधनधान्यतः। स्त्रीसम्बन्धे दशैतानि कुलानि परिवर्जयेत्॥ १०३॥

जिन कन्याओं के नाम वृक्ष, नक्षत्र, नदी, पर्वत, पक्षी आदि के हों तथा जो भयानक नामों वाली हों, उससे विवाह न करें। मनोहर अंग वाली, अच्छे नाम वाली, हंस तथा हाथी के समान चलने वाली, सूक्ष्म लोम, सूक्ष्म केशी तथा सूक्ष्म दाँतोंवाली, मृदु अंगोंवाली स्त्री से विवाह करें। प्रचुर धन-सम्पत्ति, गोधन, बकरी, भेड़ आदि दुधारू पशु का आधिक्य भी हो तथापि स्त्री सम्बन्ध हेतु उपर्युक्त १० कुलों को छोड़ दें॥१०१-१०३॥

हीनक्रियं निष्पुरुषं निश्छन्दोरोमशार्शसम्। क्षयामयाव्यपस्मारिश्चित्रकुष्ठिकुलानि च॥१०४॥

पादौ सुगुल्फौ प्रथमं प्रतिष्ठौ जङ्घे द्वितीयं च सुजानुचक्रे।

मेढ्रोर्गुह्यं च ततस्तृतीयं नाभिः कटिश्रेति चतुर्थमाहुः॥१०५॥

उदरं कथयन्ति पञ्चमं हृदयं षष्ठमथ स्तनान्वितम्।

अथ सप्तममंसजत्रुणी कथयन्त्यष्टममोष्ठकन्धरे॥१०६॥

नवमं नयने च सभ्रुणी सललाटं दशमं शिरस्तथा।

अशुभेष्वशुभं दशाफलं चरणं चरणाद्यशुभेषु शोभनम्॥१०७॥

इदं महात्मा स महानुभावः शचीनिमित्तं गुरुरब्रवीद्विजाः।

शक्रेण पृष्टः सविशेषमुत्तमं संलक्ष्यमुक्तं वरयोषलक्षणम्॥१०८॥

क्रियाहीन, पौरुषहीन, वेदविहीन, अधिक रोमयुक्त, बवासीर रोगी, क्षयरोगी, मृगीरोग वाले, किसी न किसी रोग वाले, श्वेत कुष्ठी तथा गलित कुष्ठी परिवार में विवाह न करे। स्त्रीगण के पैर तथा गुल्फ प्रथम प्रतिष्ठायुक्त होते हैं। इनकी प्रतिष्ठा में सुन्दर जानु से युक्त शोभित जङ्घन का द्वितीय स्थान है। मेढ्र, उरु तथा गुह्याङ्ग का तीसरा स्थान है। कटि एवं नाभि का चौथा स्थान है। पाँचवाँ सौन्दर्य स्थान उदर का तथा स्तनयुक्त हृदय का छठा स्थान है। कन्धा तथा सन्धि का सातवाँ, अधरद्वय का आठवाँ, सुन्दर भ्रूयुक्त नेत्र का नौवाँ, सुन्दर लालटयुक्त शिरे का दशम स्थान है। ये स्थान यदि ऊपर कहे लक्षणों के अनुसार शुभ हैं, तब शुभफल होगा। अशुभ होने से अशुभफल होगा॥१०४-१०८॥

मत्सकाशात्पुनः श्रुत्वा लक्षणं पुरुषस्य च। यथाधुना भवद्भिस्तु श्रुतं मत्तो द्विजोत्तमाः॥१०९॥

लक्षणेभ्यः प्रशस्तं तु स्त्रीणां सद्वृत्तमुच्यते। सद्वृत्तमुक्त्वा या स्त्री सा प्रशस्ता न च लक्षणैः॥११०॥

ईदृग्लक्षणसम्पन्नां सुकन्यामुद्वहेत्तु यः। ऋद्धिर्वृद्धिस्तथा कीर्तिस्तत्र तिष्ठति नित्यशः॥१११॥

॥ इति श्रीभविष्यमहापुराणे शतार्धसाहस्र्यां संहितायां ब्राह्मे पर्वणि

स्त्रीणां शुभाशुभलक्षणवर्णनं नाम पञ्चमोऽध्यायः॥५॥

हे द्विजवृन्द! जैसे आप सबने स्त्रीगण के शुभ-अशुभ लक्षणों का वर्णन मुझसे सुना, अब इसी प्रकार से मुझसे पुरुषों के भी शुभाशुभ लक्षण मुझसे सुनें। यहाँ मैंने जिन शुभ-अशुभ फलद लक्षणों को कहा है, उससे भी अधिक मैंने स्त्रीगण के सदाचरण की प्रशंसा भी की है। यदि स्त्री अच्छे लक्षण की होकर भी सत् आचार से रहित है, तब वह प्रशस्ता है ही नहीं। यहाँ कही गयी शुभलक्षणा सुकन्या से जो विवाह करता है, उसके यहाँ सदैव ऋद्धि-वृद्धि तथा कीर्ति स्थित रहती है॥१०९-१११॥

॥ श्रीभविष्यमहापुराण के शतार्ध साहस्री नामक संहिता के ब्राह्मपर्व में
स्त्रियों के शुभ-अशुभ लक्षणों का वर्णन नामक पाँचवाँ अध्याय पूर्ण हुआ॥५॥

